

भविष्यवाणी की आत्मा: मध्यरात्रि की पुकार

हबक्कूक की दो पटियाँ

Jeff Pippenger

2012-10-13

स्पष्टीकरण का एक वचन

हाल ही में हमने हबक्कूक की दो पटियाँ के लिप्यंतरण को तैयार करना आरंभ किया, ताकि उसका अनुवाद हमारी वेबसाइट पर प्रतिनिधित्व की गई विभिन्न भाषाओं में किया जा सके। एक मौखिक प्रस्तुति को लिखित प्रस्तुति में परिवर्तित करने का कार्य, उससे कहीं अधिक कठिन और व्यापक कार्य है जितना कोई व्यक्ति समझ सकता है, यदि वह उन सभी प्रक्रियाओं से परिचित न हो जिनसे होकर एक मौखिक प्रस्तुति को लिखित प्रस्तुति में रूपांतरित करना पड़ता है, साथ ही इस सामग्री का अंततः वेबसाइट पर उपलब्ध विभिन्न भाषाओं में अनुवाद करने से संबंधित आवश्यक जटिलताओं सहित। हमने पचानवे प्रस्तुतियों में से पहली के प्रति-संपादन का कार्य अभी-अभी आरंभ किया था, और मैंने एक और ऐसी प्रक्रिया को पहचाना, जिससे होकर हमें भी गुजरना होगा। इसका संबंध 1989 से लेकर हमारे वर्तमान इतिहास तक इस संदेश के क्रमिक विकास से है।

लगभग पन्द्रह वर्ष पूर्व की प्रस्तुतियों में कुछ सत्य ऐसे थे जो समझ की शैशवावस्था में थे। उन सत्यों में से पहला, जिसे मुझे स्पष्ट करना है, मिलरवादी इतिहास में दूसरे स्वर्गदूत का आगमन है। उस समय मेरी समझ यह थी कि दूसरा स्वर्गदूत तब आया जब प्रोटेस्टेंट कलीसियाओं ने मिलर द्वारा प्रथम स्वर्गदूत के संदेश की प्रस्तुति के विरुद्ध अपने द्वार बन्द करने आरम्भ किए, और यह 1843 वर्ष की समाप्ति के साथ संबद्ध था। विलियम मिलर ने समय की ऐसी गणना पर कार्य किया था जिसके विषय में वह विश्वास करता था कि 1843 के वर्ष 22 मार्च 1843 को आरम्भ हुए और 22 मार्च 1844 को समाप्त हुए। उसने यह समझा था कि वे तीन भविष्यवाणियाँ, जिन्हें अंततः दो पवित्र चार्टों पर रखा गया, 1843 के वर्ष में समाप्त होंगी, और वह मानता था कि वह वर्ष 22 मार्च 1844 को समाप्त हुआ। वह दो बातों में गलत था।

दानियेल बारह के 1335 दिनों, लैव्यव्यवस्था छब्बीस के “सात कालों” के 2520 वर्षों, और दानियेल आठ के 2300 दिनों की ये तीन भविष्यवाणियाँ मिलर के द्वारा मार्च 1844 में समाप्त होने वाली समझी गईं। इसके पश्चात प्रभु ने सैमुएल स्नो का मार्गदर्शन किया कि वे न केवल यह समझें कि भविष्यवाणियाँ 1843 में नहीं, बल्कि 1844 में समाप्त हुईं; बल्कि स्नो ने समय की कराईत गणना को भी लागू करना प्रारम्भ किया, जो समय-गणना की वह पद्धति नहीं थी जिसका प्रयोग मिलर कर रहे थे। मिलर रब्बी/विषुव-आधारित समय-गणना का उपयोग कर रहे थे, जो वर्ष का आधार वसंत से वसंत तक रखती थी।

जब हम हबक्कूक की दो पट्टियों को प्रस्तुत कर रहे थे, तब हमने इस ऐतिहासिक वास्तविकता को नहीं समझा था और मिलर के अनुभव का उपयोग करते हुए 22 मार्च 1844 को दूसरे के आगमन और विलंब के समय की शुरुआत के रूप में चिह्नित कर रहे थे। मैं यह समझता था, और अब भी समझता हूँ, कि उस स्वर्गदूत का आगमन उस समय के अनुरूप था जब प्रोटेस्टेंटों ने मिलर के प्रथम स्वर्गदूत के संदेश को अस्वीकार कर दिया था, और निम्नलिखित अनुच्छेद मेरा संदर्भ-बिंदु था।

“जून 1842 में, श्री मिलर ने पोर्टलैंड के कैस्को स्ट्रीट कलीसिया में अपने व्याख्यानों की दूसरी श्रृंखला दी। मुझे इन व्याख्यानों में उपस्थित होना एक महान विशेषाधिकार प्रतीत हुआ; क्योंकि मैं निरुत्साह के अधीन हो गई थी, और अपने उद्धारकर्ता से मिलने के लिए स्वयं को तैयार नहीं पाती थी। इस दूसरी श्रृंखला ने नगर में पहली की अपेक्षा कहीं अधिक हलचल उत्पन्न कर दी। कुछ ही अपवादों को छोड़कर, विभिन्न संप्रदायों ने श्री मिलर के विरुद्ध अपनी कलीसियाओं के द्वार बंद कर दिए। विविध उपदेश-मंचों से दिए गए अनेक प्रवचनों में व्याख्याता

की कथित उन्मादी त्रुटियों को प्रकट करने का प्रयास किया गया; परन्तु चिंतित श्रोताओं की भीड़ उनकी सभाओं में उमड़ती थी, और बहुत से लोग भवन के भीतर प्रवेश करने में असमर्थ रह जाते थे। सभाएँ असाधारण रूप से शांत और ध्यानमग्न थीं।” *Life Sketches*, 27.

मैंने समझा कि मिलर के संदेश के लिए द्वारों का बंद होना प्रथम स्वर्गदूत के अस्वीकार की शुरुआत को चिह्नित करता था, और समय की रब्बी/विषुव-आधारित गणना के संबंध में मिलर की समझ के अनुरूप मैंने यह मान लिया कि 22 मार्च, 1844, वर्ष 1843 की समाप्ति को चिह्नित करता था। जून 1842 में पोर्टलैंड में मिलर की प्रस्तुति वास्तव में एक ऐसा मार्गचिह्न है जो एक क्रमिक अस्वीकार को पहचानता है, जिसका अंततः समापन 18 अप्रैल, 1844 को हुआ; परन्तु प्रस्तुतियों के समय तक हम समय की कराईती गणना के सैमुएल स्नो द्वारा किए गए अनुप्रयोग को नहीं पहचान पाए थे।

जब हमने प्रथम प्रस्तुति का प्रतिलिपि-संपादन आरम्भ किया, तब मैं यह देखने लगा कि उस समय जो अभिलिखित किया गया था, वह मानो उस बात का विरोध करता है जिसे हम अब सिखाते हैं। ऐसा है भी, और नहीं भी। यह केवल दूसरे स्वर्गदूत के क्रमिक आगमन पर एक विशेष बल है, और साथ ही इस संदेश के क्रमिक रूप से खुलने का भी एक दृष्टांत है, जैसा कि मिलेराइट इतिहास में भी हुआ था। यह स्पष्टीकरण-नोट उन लोगों की ओर संबोधित होना चाहिए जो 19 अप्रैल, 1844 को प्रथम मिलेराइट निराशा के रूप में हमारी पहचान, और अतीत में जो सिखाया गया था, उसके कारण ठोकर खा चुके हैं।

“पहला और दूसरा संदेश 1843 और 1844 में दिए गए थे, और अब हम तीसरे के प्रचार के अधीन हैं; परन्तु ये तीनों संदेश अब भी घोषित किए जाने हैं। यह अब उतना ही अनिवार्य है जितना पहले कभी था कि सत्य की खोज करने वालों के सामने इन्हें पुनः प्रस्तुत किया जाए। लेखनी और वाणी के द्वारा हमें इस घोषणा को सुनाना है, उनका क्रम, और उन भविष्यद्वाणियों के अनुप्रयोग को दिखाते हुए जो हमें तीसरे स्वर्गदूत के संदेश तक ले आती हैं। पहले और दूसरे के बिना तीसरा हो ही नहीं सकता। इन संदेशों को हमें संसार को प्रकाशनों में, प्रवचनों में देना है, भविष्यद्वाणी के इतिहास की धारा में उन बातों को दिखाते हुए जो हो चुकी हैं और जो होने वाली हैं।” *Selected Messages*, book 2, 104.

हबक्कूक की दो पट्टिकाएँ 95 में से 1

हबक्कूक की दो पट्टिकाओं और मध्यरात्रि की पुकार का परिचय

इस श्रृंखला में हम हबक्कूक की दो पट्टिकाओं—1843 और 1850 के चार्टों—का एक विस्तृत अवधि के दौरान अध्ययन करेंगे। हम आरम्भ में मध्यरात्रि के पुकार को उसके उचित स्थान पर स्थापित करेंगे। जैसा कि उल्लेख किया गया है, प्रारम्भिक प्रस्तुतियों का अधिकांश भाग उन लोगों के लिए पुनरावलोकन होगा जो इस संदेश से परिचित हैं; परन्तु चूँकि हम ऐसी एक श्रृंखला तैयार कर रहे हैं जिसका अध्ययन इस संदेश से नए लोग भी कर सकते हैं, इसलिए हमें उनके लिए कुछ मूलभूत विचार प्रस्तुत करने होंगे। हम मध्यरात्रि के पुकार से आरम्भ करेंगे, और अपना ध्यान उस एक पक्ष पर केन्द्रित करेंगे जो एलेन व्हाइट के प्रथम दर्शन में पाया जाता है। आइए, *Christian Experience and Teachings*, पृष्ठ 57 से पहला अनुच्छेद पढ़ें।

1844 में समय के बीत जाने के अधिक दिन बाद नहीं, कि मुझे अपना पहला सार्वजनिक दर्शन प्रदान किया गया। मैं पोर्टलैंड, मेन में श्रीमती हेन्स से मिलने गई हुई थी, जो मसीह में एक प्रिय बहन थीं, जिनका हृदय मेरे हृदय से बंधा हुआ था। हम पाँचों, सब की सब स्त्रियाँ, परिवार की वेदी के सामने शांतिपूर्वक घुटने टेके हुए थीं। जब हम प्रार्थना कर रही थीं, तब परमेश्वर की सामर्थ्य मुझ पर वैसे उतरी जैसी पहले कभी नहीं उतरी थी।

ये पाँच स्त्रियाँ, जिनके हृदय सिस्टर व्हाइट के साथ जुड़े हुए थे, परमेश्वर की सामर्थ्य के किसी भी प्रकटीकरण का विरोध नहीं कर रही थीं। विशेष रूप से, वे सब स्त्रियाँ थीं, जो कलीसिया का प्रतिनिधित्व करती हैं, और उनकी संख्या पाँच थी, जिसे पाँच बुद्धिमान कुँवारियों के रूप में देखा जा सकता है। यह केवल एक अवलोकन है।

मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मैं ज्योति से घिरी हुई हूँ और पृथ्वी से ऊपर और ऊपर उठती जा रही हूँ। मैं संसार में एडवेंट लोगों को देखने के लिए मुड़ी, पर उन्हें न पा सकी, तभी एक वाणी ने मुझसे कहा, “फिर देखो और कुछ ऊँचा देखो।” इस पर मैंने अपनी आँखें उठाई और संसार के बहुत ऊपर ऊँचाई पर एक सीधा और सँकरा मार्ग बना हुआ देखा। इस मार्ग पर एडवेंट लोग उस नगर की ओर यात्रा कर रहे थे, जो उस मार्ग के दूरस्थ छोर पर था। मार्ग के आरंभ में उनके पीछे एक उज्ज्वल प्रकाश स्थापित था, जिसके विषय में एक स्वर्गदूत ने मुझे बताया कि वह मध्यरात्रि की पुकार थी। यह प्रकाश समस्त मार्ग पर चमकता था और उनके पाँवों के लिए उजियाला देता था, ताकि वे ठोकर न खाएँ। यदि वे अपनी दृष्टि यीशु पर स्थिर रखते, जो उनके ठीक आगे था और उन्हें नगर की ओर ले चला जा रहा था, तो वे सुरक्षित थे। परन्तु शीघ्र ही कुछ थक गए और कहने लगे कि नगर अभी बहुत दूर है, और वे अपेक्षा करते थे कि वे उसमें इससे पहले ही प्रवेश कर चुके होते। तब यीशु अपनी महिमामय दाहिनी भुजा उठाकर उनका उत्साह बढ़ाता, और उसकी भुजा से एक ज्योति निकलती जो एडवेंट दल के ऊपर लहराती थी, और वे पुकार उठते, “अल्लेलूया!” अन्य लोगों ने उतावली में अपने पीछे के उस प्रकाश का इन्कार किया और कहा कि वह परमेश्वर नहीं था जिसने उन्हें इतनी दूर तक पहुँचाया था। तब उनके पीछे का प्रकाश बुझ गया, जिससे उनके पाँव पूर्ण अन्धकार में रह गए, और वे ठोकर खाकर लक्ष्य और यीशु, दोनों की दृष्टि खो बैठे, और मार्ग से नीचे गिरकर नीचे के अन्धकारमय और दुष्ट संसार में जा पड़े।

विलियम मिलर और मध्यरात्रि की पुकार

इस प्रथम प्रस्तुति में, कुछ बिंदुओं को स्थापित करने के पश्चात, हम दिसम्बर 1844 में एडवेंटिस्टों के लो हैम्पटन सम्मेलन पर चर्चा करेंगे। इस सम्मेलन में कुछ मिलेराइट्स एकत्र हुए, और विलियम मिलर ने मध्यरात्रि के पुकार की समझ को अस्वीकार कर दिया। यहाँ तर्क यह है कि यह दर्शन, यद्यपि हम सबके लिए है, विशेष रूप से विलियम मिलर के लिए था।

उसी महीने, विलियम मिलर ने अपने पीछे के उस प्रकाश—मध्यरात्रि पुकार—का इन्कार किया, जिसके कारण वह नीचे के दुष्ट संसार में पथ से गिर पड़े। हम इसके निहितार्थों की जाँच करेंगे। ऐतिहासिक प्रमाण दर्शाते हैं कि सभी मिलरवादी यह मानते थे कि वे दस कुँवारियों के दृष्टान्त को पूरा कर रहे थे; यह उनके बीच सामान्यतः ज्ञात बात थी। हम दिखाएँगे कि विलियम मिलर को इस बात की समझ थी कि मध्यरात्रि पुकार क्या थी। मिलर का विश्वास था कि मध्यरात्रि पुकार दानियेल 8:14 और प्रकाशितवाक्य 14:6-9 का न्याय-घड़ी का सन्देश था। वह मानता था कि जिस सन्देश का प्रचार उसने 1830 के दशक के आरम्भ में करना शुरू किया था, वही मध्यरात्रि पुकार थी, “देखो, दूल्हा आ रहा है,” और कि यीशु दूल्हे के रूप में संसार के पास आ रहे थे।

मिलेराइट इतिहास के अधिकांश भाग में वे यह विश्वास करते थे कि वे दस कुँवारियों के दृष्टान्त को पूरा कर रहे हैं, परन्तु वे यह समझते थे कि मध्यरात्रि का पुकार उस संदेश का वर्णन करता है जिसका वे प्रचार करते आए थे। तथापि, 1844 की ग्रीष्म ऋतु तक एक नई और सही समझ प्रकट हुई: मध्यरात्रि का पुकार सातवें महीने का आंदोलन था, जिसमें यह अपेक्षा की जा रही थी कि यीशु सातवें महीने के दसवें दिन आएँगे। वही वास्तविक मध्यरात्रि का पुकार था। जब मिलर ने दिसम्बर 1844 में वास्तविक मध्यरात्रि के पुकार को अस्वीकार किया, तब वह 1844 की ग्रीष्म ऋतु के इतिहास को अस्वीकार कर रहा था और अपनी पूर्ववर्ती स्थिति पर लौट रहा था कि वह केवल 1830 के दशक से चला आ रहा सामान्य संदेश था। मध्यरात्रि के पुकार की गतिशीलताओं को समझना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यदि आप 2520 को वैसे नहीं समझते जैसे मिलेराइट समझते थे, तो आप मध्यरात्रि के पुकार को नहीं समझ सकते। यदि आप मध्यरात्रि के पुकार को वैसे नहीं समझ सकते जैसे मिलेराइट समझते थे, तो आप उस पथ से नीचे दुष्ट संसार में गिर पड़ते हैं।

इस प्रस्तुति में, हम चार्ट पर निहित कुछ ऐसी सच्चाइयों से आरम्भ करेंगे जिन्हें आज एडवेंटिज्म द्वारा खुले रूप में अस्वीकार किया जाता है। सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट चर्च का बाइबिलिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट और अधिकांश एडवेंटिस्ट धर्मशास्त्री 2520 को अस्वीकार करते हैं। आगे बढ़ते हुए हम इसका बाइबिलीय दृष्टि से निराकरण करेंगे, परन्तु प्रारम्भ में हम यह दिखाएँगे कि एलेन व्हाइट 2520 का पूर्ण समर्थन करती हैं। इंस्टीट्यूट और अधिकांश धर्मशास्त्री

डेली के विषय में अग्रदूतों की समझ को भी अस्वीकार करते हैं। हम यह दिखाएँगे कि डेली के विषय में इस अग्रदूत-समझ—कि वह बुतपरस्ती है—को अस्वीकार करना भविष्यवाणी की आत्मा को अस्वीकार करना है। इंस्टीट्यूट तुरहियों—पाँचवीं और छठी तुरही—के विषय में अग्रदूतों की समझ को भी सार्वजनिक रूप से अस्वीकार करता है। हम यह दिखाने से आरम्भ करेंगे कि तुरहियों के विषय में अग्रदूतों की समझ को अस्वीकार करना भविष्यवाणी की आत्मा को अस्वीकार करना है।

आज अधिकांश एडवेंटिस्ट 1290 और 1335 के विषय में अधिक से अधिक अस्पष्ट हैं। 1335 की अग्रदूतों की समझ के बिना, 22 मार्च 1844 को आरंभ हुए विलंब-काल की पहचान करने के लिए कोई बाइबिलीय औचित्य नहीं है। विलंब-काल को समझे बिना, मध्यरात्रि के पुकार की गतिकी को नहीं समझा जा सकता। मध्यरात्रि के पुकार को समझे बिना, मनुष्य नीचे स्थित दुष्ट संसार की ओर जाने वाले पथ से गिर पड़ता है। हम इन सत्यों को चार्ट पर भविष्यवाणी की आत्मा की स्पष्ट स्वीकृति के संदर्भ में दिखाएँगे, और फिर परमेश्वर के वचन से उनका विश्लेषण करेंगे। परन्तु पहले, हमें यह देखना होगा कि मिलेराइट इतिहास के चारों ओर क्या था और वह क्या था जिसने मध्यरात्रि के पुकार को उत्पन्न किया।

मिलरवादी इतिहास और प्रथम स्वर्गदूत का आगमन

हम मिलेराइट इतिहास को दिखाने और 1798 को संबोधित करने के लिए *Thoughts on Daniel and Revelation*, पृष्ठ 521, से यूरियाह स्मिथ के साथ आरम्भ करते हैं। यूरियाह स्मिथ लिखते हैं, “प्रकाशितवाक्य 10 की घटनाओं का कालक्रम इस तथ्य से और अधिक निश्चित होता है कि यह स्वर्गदूत प्रकाशितवाक्य 14 के पहले स्वर्गदूत के समान है।” प्रकाशितवाक्य 10 में, एक पराक्रमी स्वर्गदूत अपने हाथ में एक खुली हुई छोटी पुस्तक लिए स्वर्ग से उतरता है। एलेन व्हाइट हमें बताती हैं कि यह पराक्रमी स्वर्गदूत यीशु मसीह है, और वह छोटी पुस्तक दानियेल की पुस्तक है। अध्याय दस के अंत तक, यूहन्ना से कहा जाता है कि वह उस छोटी पुस्तक को खा ले, जो उसके मुँह में मीठी और उसके पेट में कड़वी होगी। यूहन्ना मिलेराइट इतिहास का प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ दानियेल का संदेश मीठा है, परन्तु वह कड़वी निराशा तक ले जाता है। अगुवों के अनुसार, प्रकाशितवाक्य 10 का वह पराक्रमी स्वर्गदूत प्रकाशितवाक्य 14 का पहला स्वर्गदूत है—वे दोनों एक ही स्वर्गदूत हैं।

हम प्रायः प्रकाशितवाक्य में इन स्वर्गदूतों के विषय में विशिष्ट रूप से अधिक समय नहीं लगाते, परन्तु हमें ऐसा करना चाहिए। प्रकाशितवाक्य 10 का वह शक्तिशाली स्वर्गदूत वही स्वर्गदूत भी है, जिसके विषय में विलियम मिलर का विश्वास था कि वह प्रकाशितवाक्य 14 के प्रथम स्वर्गदूत के कार्य को सम्पन्न करके मध्यरात्रि की पुकार को पूरा कर रहा था: “परमेश्वर से डरो और उसकी महिमा करो, क्योंकि उसके न्याय का समय आ पहुँचा है।” उसके न्याय का समय दानियेल 8:14 की ओर संकेत करता है। ये स्वर्गदूत सम्पन्न किए गए कार्य के भिन्न-भिन्न पक्षों की पहचान करते हैं।

ऊरियाह स्मिथ की ओर लौटते हुए: ‘प्रकाशितवाक्य 10 की घटनाओं का कालक्रम इस तथ्य से और अधिक निश्चित होता है कि यह स्वर्गदूत प्रकाशितवाक्य 14 के प्रथम स्वर्गदूत के समान है।’ वह स्पष्ट करते हैं कि कौन-सी बातें उन्हें परस्पर जोड़ती हैं: दोनों के पास घोषित करने के लिए एक विशेष संदेश है, दोनों अपनी उद्धोषणा ऊँचे शब्द से करते हैं, दोनों सृष्टिकर्ता के संबंध में समान प्रकार की भाषा का प्रयोग करते हैं, और दोनों समय की घोषणा करते हैं—एक यह शपथ खाकर कि अब समय फिर न होगा, और दूसरा यह घोषित करते हुए कि परमेश्वर के न्याय का समय आ पहुँचा है। प्रकाशितवाक्य 14:6 का संदेश अंत के समय के आरंभ की इस ओर स्थित है।

ऊरियाह स्मिथ कहते हैं कि अन्त का समय 1798 है, और प्रकाशितवाक्य 14 का संदेश उसके बाद आता है। वह लिखते हैं, “परन्तु प्रकाशितवाक्य 14:6 का संदेश अन्त के समय के आरम्भ के इस पार स्थित है। यह परमेश्वर के न्याय के घंटे के आ पहुँचने की घोषणा है, और इसलिए इसका प्रयोग अन्तिम पीढ़ी में होना चाहिए। पौलुस ने न्याय के घंटे के आ पहुँचने का प्रचार नहीं किया। लूथर और उसके सहकर्मियों ने भी इसका प्रचार नहीं किया। पौलुस ने आने वाले न्याय के विषय में तर्क किया, जो अनिश्चित रूप से भविष्य में था, और लूथर ने उसे अपने समय से कम-से-कम

तीन सौ वर्ष आगे ठहराया। इसके अतिरिक्त, पौलुस कलीसिया को ऐसे किसी प्रचार के विरुद्ध चेतावनी देता है कि परमेश्वर के न्याय का घंटा आ पहुँचा है, जब तक कि एक निश्चित समय न आ जाए।" 2 थिस्सलुनीकियों 2:1-3 में पौलुस कहता है कि मसीह का दिन निकट नहीं है, जब तक पहले धर्मत्याग न हो और पाप का मनुष्य प्रकट न हो। पौलुस पाप के मनुष्य, छोटे सींग, अर्थात् पोपाई सत्ता, का परिचय देता है, और उसकी प्रभुता की समस्त अवधि पर, जो 1260 वर्षों तक बनी रही और 1798 में समाप्त हुई, एक चेतावनी का आवरण डाल देता है।

1798 में, मसीह के दिन को निकट घोषित करने के विरुद्ध जो प्रतिबंध था, वह समाप्त हो गया। अन्तकाल आरम्भ हो गया, और छोटी पुस्तक से मुहर हटा दी गई। तब से, प्रकाशितवाक्य 14 का स्वर्गदूत आगे बढ़ा है। उरियाह स्मिथ कहते हैं, "यदि आप इसे देखेंगे," 1798 से प्रथम स्वर्गदूत का सन्देश आगे बढ़ा है। 1798 में, प्रकाशितवाक्य 14 का प्रथम स्वर्गदूत इतिहास में उपस्थित होता है—यह अग्रदूतों की समझ है। तब से, प्रकाशितवाक्य 14 के स्वर्गदूत ने यह प्रचार किया है कि परमेश्वर के न्याय का समय आ पहुँचा है, और दसवें अध्याय के स्वर्गदूत ने समुद्र और पृथ्वी पर अपना स्थान ले लिया है, और शपथ खाई है कि अब और समय न रहेगा। उनकी पहचान निर्विवाद है। जो भी तर्क एक को किसी स्थान पर स्थापित करते हैं, वे दूसरे पर भी समान रूप से लागू होते हैं। वर्तमान पीढ़ी इन दो भविष्यवाणियों की पूर्ति देख रही है। आगमन के प्रचार में, विशेषकर 1840 से 1844 तक, उनकी पूर्ण और परिस्थितिसहित पूर्ति आरम्भ हुई।

स्मिथ प्रकाशितवाक्य 14 के प्रथम स्वर्गदूत के 1798 में आगमन के संदर्भ में 1840 और 1844 को चिह्नित करते हैं, परन्तु वे 1840 में भी प्रथम स्वर्गदूत को चिह्नित करते हैं, जहाँ संदेश सामर्थ्य प्राप्त करता है। आगमन के प्रचार में, विशेषकर 1840 से 1844 तक, उनका पूर्ण परिपालन आरम्भ हुआ। स्वर्गदूत की यह स्थिति कि उसका एक पाँव समुद्र पर और एक भूमि पर है, उसकी उद्घोषणा के व्यापक विस्तार को सूचित करती है। यह संदेश महासागर को पार करेगा और विभिन्न जातियों तक पहुँचेगा, और आगमन की उद्घोषणा वास्तव में संसार के प्रत्येक मिशन-स्टेशन तक पहुँची। 1840 से, एलेन व्हाइट के अनुसार, प्रथम स्वर्गदूत का संदेश संसार के प्रत्येक मिशन-स्टेशन तक पहुँचाया गया। यह तब पूरा हुआ जब बाइबिलीय भविष्यवाणी के वर्ष-दिन सिद्धान्त की पुष्टि उस्मानी साम्राज्य के पतन के साथ हुई। इस समय हम विवरणों पर विचार नहीं कर रहे हैं, बल्कि मिलरवादी इतिहास और मध्यरात्रि की पुकार की गतिकी के लिए पृष्ठभूमि तैयार कर रहे हैं।

मुख्य ऐतिहासिक घटनाएँ: 1833 और तारों का गिरना

1833 में तारों का गिरना घटित हुआ। एलेन व्हाइट ने The Great Controversy, पृष्ठ 333 में टिप्पणी की है: '1833 में, मिलर द्वारा मसीह के शीघ्र आगमन के प्रमाणों को सार्वजनिक रूप से प्रस्तुत करना आरम्भ करने के दो वर्ष बाद, उन चिन्हों में से अंतिम चिन्ह प्रकट हुआ, जिन्हें उद्धारकर्ता ने अपने दूसरे आगमन के संकेतस्वरूप प्रतिज्ञात किया था। यीशु ने कहा: "आकाश से तारे गिर पड़ेंगे।" मत्ती 24:29। और यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य में, जब वह दर्शन में उन घटनाओं को देख रहा था जो परमेश्वर के दिन का अग्रसूचन करेंगी, यह घोषित किया: "आकाश के तारे पृथ्वी पर गिर पड़े, जैसे अंजीर का वृक्ष प्रचण्ड वायु से हिलाए जाने पर अपने कच्चे अंजीर गिरा देता है।" प्रकाशितवाक्य 6:13। इस भविष्यवाणी की एक विलक्षण और प्रभावशाली पूर्ति 13 नवम्बर, 1833 की महान उल्कावृष्टि में हुई।'

विलियम मिलर की गवाही इस प्रकार वर्णन करती है: '1833 की गर्मियों में, शनिवार को नाशते के बाद, मैं अपने डेस्क पर किसी बिंदु की जाँच करने के लिए बैठा था; और जब मैं काम पर बाहर जाने के लिए उठा, तब यह पहले से कहीं अधिक बलपूर्वक मेरे मन पर अंकित हुआ, "जाओ और इसे संसार को बता दो।" यह प्रभाव इतना आकस्मिक था और इतनी शक्ति के साथ आया कि मैं यह कहते हुए अपनी कुर्सी पर फिर बैठ गया, "मैं नहीं जा सकता, प्रभु।" "क्यों नहीं?" मानो यह उत्तर मिला, और तब मेरे सब बहाने सामने आ गए, मेरी योग्यता का अभाव; पर मेरी व्याकुलता इतनी बढ़ गई कि मैंने परमेश्वर के साथ एक गंभीर वाचा की कि यदि वह मार्ग खोल दे, तो मैं जाऊँगा और संसार के प्रति अपना कर्तव्य पूरा करूँगा। "मार्ग खोलने से तुम्हारा क्या अभिप्राय है?" मानो यह बात मेरे पास आई। तब मैंने कहा, यदि मुझे किसी भी स्थान पर सार्वजनिक रूप से बोलने का निमंत्रण मिले, तो मैं जाऊँगा और उन्हें

बताऊंगा कि प्रभु के आगमन के विषय में मैं बाइबल में क्या पाता हूँ। तत्काल मेरा सारा बोझ उतर गया। और मैं इस बात से आनन्दित हुआ कि संभवतः मुझे इस प्रकार नहीं बुलाया जाएगा; क्योंकि मुझे ऐसा निमंत्रण कभी नहीं मिला था, मेरे संघर्षों का किसी को ज्ञान न था, और किसी भी कार्य-क्षेत्र के लिए आमंत्रित किए जाने की मुझे बहुत ही थोड़ी आशा थी। इस समय से लगभग आधे घंटे के भीतर, कमरे से बाहर निकलने से पहले ही, ड्रेसडेन में रहने वाले श्री गिलफ़र्ड का एक पुत्र, जो मेरे निवास से लगभग सोलह मील दूर था, भीतर आया और उसने कहा कि उसके पिता ने मुझे बुलाया है और चाहते हैं कि मैं उसके साथ उनके घर चलूँ, यह समझते हुए कि शायद वे किसी काम के विषय में मुझसे मिलना चाहते होंगे। मैंने उससे पूछा कि वे क्या चाहते हैं। उसने उत्तर दिया कि अगले दिन उनके गिरजाघर में कोई प्रचार नहीं होना था, और उसके पिता चाहते थे कि मैं आकर लोगों से प्रभु के आगमन के विषय में बात करूँ। अपनी की हुई उस वाचा के कारण मैं तत्काल अपने ऊपर क्रोधित हो उठा। मैंने उसी क्षण प्रभु के विरुद्ध विद्रोह किया और न जाने का निश्चय कर लिया। उस लड़के को बिना कोई उत्तर दिए मैं निकट के एक उपवन में चला गया और बड़ी व्याकुलता में एकांत में हो गया। वहाँ मैंने लगभग एक घंटे तक प्रभु के साथ संघर्ष किया, इस प्रयत्न में कि अपने आप को उस वाचा से मुक्त करा लूँ जो मैंने उससे की थी, पर मुझे कोई राहत न मिली। मेरे विवेक पर यह बात अंकित की गई, “क्या तुम परमेश्वर के साथ वाचा करके उसे इतनी शीघ्र तोड़ दोगे?” और ऐसा करने की अत्यधिक पापमयता ने मुझे अभिभूत कर दिया। अंत में मैंने समर्पण कर दिया और प्रभु से प्रतिज्ञा की कि यदि वह मुझे संभाले रखे, तो मैं जाऊँगा, उस पर भरोसा रखते हुए कि वह मुझे वह अनुग्रह और सामर्थ्य देगा जिससे मैं वह सब पूरा कर सकूँ जो वह मुझसे अपेक्षा करे। मैं घर लौटा और उस लड़के को अब भी प्रतीक्षा करते पाया। वह दोपहर के भोजन के बाद तक ठहरा रहा, और मैं उसके साथ ड्रेसडेन लौट गया।’ इस प्रकार 1833 की गर्मियों में मिलर ने सार्वजनिक रूप से इस संदेश को प्रस्तुत करना आरम्भ किया। दिसंबर 1833 में तारों का गिरना उसके संदेश में गंभीरता का और भी योग जोड़ गया।

1840: भविष्यवाणी की पूर्ति और ओट्टोमन साम्राज्य

1840 में, एलेन व्हाइट भविष्यवाणी की एक उल्लेखनीय पूर्ति पर टिप्पणी करती हैं। भविष्यवाणी की आत्मा में यह अनुच्छेद प्रायः विवादित रहा है; कुछ लोग यह तर्क करते हैं कि उरियाह स्मिथ ने इसे The Great Controversy में सम्मिलित किया था, परन्तु ये तर्क निराधार हैं। वह 1840 तक पहुँचना वाली भविष्यवाणी की पूर्तियों के क्रम के विषय में बोल रही हैं, जिसमें तारों का गिरना और अंधकारमय दिवस भी सम्मिलित हैं। वह लिखती हैं, “सन 1840 में, भविष्यवाणी की एक और उल्लेखनीय पूर्ति ने व्यापक रुचि उत्पन्न की।”

वह बाइबिलीय भविष्यवाणी का उल्लेख करती है, न कि केवल जोसियाह लिच द्वारा की गई किसी मानवीय भविष्यवाणी का। इससे दो वर्ष पूर्व, द्वितीय आगमन का प्रचार करने वाले एक प्रमुख सेवक, जोसियाह लिच ने प्रकाशितवाक्य 9 का एक व्याख्यात्मक विवरण प्रकाशित किया था, जिसमें उस्मानी साम्राज्य के पतन की भविष्यवाणी की गई थी। उसकी गणनाओं के अनुसार, इस शक्ति का पराभव 11 अगस्त, 1840 को होना था। निर्दिष्ट समय पर, तुर्की ने अपने राजदूतों के माध्यम से यूरोप की मित्र-शक्तियों का संरक्षण स्वीकार कर लिया और इस प्रकार अपने को मसीही राष्ट्रों के नियंत्रण के अधीन कर दिया। इस घटना ने भविष्यवाणी को ठीक-ठीक पूरा कर दिया। जब यह ज्ञात हुआ, तब असंख्य लोग मिलर और उसके सहयोगियों द्वारा अपनाए गए भविष्यवाणी-व्याख्या के सिद्धांतों की सत्यता के प्रति आश्चस्त हो गए, और आगमन आंदोलन को एक अद्भुत प्रेरणा मिली। विद्वान और प्रतिष्ठित लोग मिलर के साथ उसके विचारों का प्रचार करने और उन्हें प्रकाशित करने में सम्मिलित हो गए, और 1840 से 1844 तक यह कार्य तीव्रता से फैलता गया।

यूरियाह स्मिथ ने हमें बताया था कि प्रकाशितवाक्य 14 का पहला स्वर्गदूत 1798 में आया, परन्तु वह वही स्वर्गदूत है जो प्रकाशितवाक्य 10 का स्वर्गदूत है। प्रकाशितवाक्य 10 में, यूहन्ना से कहा जाता है कि वह स्वर्गदूत के हाथ से छोटी पुस्तक ले और उसे खा जाए, और वह उसके मुँह में मीठी हो जाएगी। बाइबल की भविष्यवाणी के वर्ष-दिन सिद्धान्त के आधार पर उस्मानी साम्राज्य के पतन की दो वर्षों तक भविष्यवाणी करने के पश्चात् 11 अगस्त, 1840 को मिलेरवादी सन्देश मीठा हो गया। जब वह घटना ठीक वैसे ही पूरी हुई, तब वह सन्देश, जिसका वे प्रचार कर रहे थे,

उनके मुँह में मीठा हो गया।

11 अगस्त, 1840 को वह संदेश उनके मुँह में मीठा हो गया। यूहन्ना से कहा जाता है कि वह उस स्वर्गदूत के हाथ में से उस छोटी पुस्तक को ले ले जो उतर आया है। स्वर्गदूत 11 अगस्त, 1840 को उतरता है, और प्रकाशितवाक्य 10 का यह स्वर्गदूत वही है जो प्रकाशितवाक्य 14 के प्रथम स्वर्गदूत के समान है। प्रकाशितवाक्य 14 का स्वर्गदूत 1798 में अंत के समय पर आता है, परन्तु उसका संदेश 1840 में सामर्थ्य प्राप्त करता है। एलेन व्हाइट कहती हैं कि जब वह घटना ज्ञात हुई, तो बहुत बड़ी संख्या में लोग मिलर और उसके सहकर्मियों द्वारा अपनाए गए भविष्यवाणी की व्याख्या के सिद्धांतों की शुद्धता के प्रति आश्चर्य हो गए। 1930 के दशक से, 1919 से आरम्भ होकर परन्तु विशेष रूप से 1930 के दशक में, एडवेंटवाद ने मिलर और उसके सहकर्मियों द्वारा अपनाए गए भविष्यवाणी की व्याख्या के उन नियमों को अस्वीकार कर दिया है—वे नियम बाइबल-अध्ययन की प्रमाण-पाठ पद्धति थे।

1843 का चार्ट और विलंब का समय

इतिहास में अगला मार्गचिह्न 1843 का चार्ट है, जो मई 1842 में तैयार किया गया था। एलेन व्हाइट कहती हैं, “मैंने देखा कि 1843 का चार्ट प्रभु के हाथ द्वारा निर्देशित था और उसमें परिवर्तन नहीं किया जाना चाहिए था; कि उसके अंक वैसे ही थे जैसे वह उन्हें चाहता था, और उसका हाथ उन अंकों में से कुछ की एक भूल पर था और उसे छिपाए हुए था, ताकि कोई उसे तब तक न देख सके जब तक उसका हाथ हटा न लिया गया।” यह चार्ट एक भविष्यवाणी-संबंधी मार्गचिह्न है, जो मई 1842 में तैयार किया गया था। जून 1842 में, प्रोटेस्टेंट कलीसियाओं ने अपने द्वार बंद कर लिए और दूसरा स्वर्गदूत आता है।

टेस्टिमोनीज़, खंड एक, पृष्ठ 21 से: “जून 1842 में, श्री मिलर ने पोर्टलैंड, मेन की कास्को स्ट्रीट चर्च में अपने व्याख्यानों की दूसरी शृंखला दी। कुछ अपवादों को छोड़कर, विभिन्न संप्रदायों ने श्री मिलर के विरुद्ध अपने चर्चों के द्वार बंद कर दिए।” एलेन व्हाइट हमें सूचित करती हैं कि सातवें-दिन के एडवेंटिस्ट मसीहियों के रूप में, हमें कारण से परिणाम तक तर्क करना सीखना चाहिए। वह कारण जिसने प्रोटेस्टेंट चर्चों को अपने द्वार बंद करने के लिए प्रेरित किया, इस चार्ट का प्रस्तुत किया जाना था। जब मई में यह चार्ट प्रस्तुत किया गया, तब प्रोटेस्टेंट चर्चों ने यह निश्चय कर लिया कि मिलरवादी भ्रमित उन्मादी हैं।

इसके बाद पहली निराशा आती है। The Great Controversy, पृष्ठ 393 से: 'As early as 1842, the direction given in this prophecy to write the vision and make it plain upon tables, that he may run that readeth it, had suggested to Charles Fitch the preparation of a prophetic chart to illustrate the visions of Daniel and Revelation.' चार्ल्स फिच, जिनका देहांत 22 अक्टूबर, 1844 की महान निराशा से ठीक पहले हो गया था, इस इतिहास में प्रभु के द्वारा प्रयुक्त हुए। उन्होंने उस चार्ट को तैयार किया, जो मई 1842 में प्रकाशित हुआ।

इस चार्ट का प्रकाशन हबक्कूक की आज्ञा की पूर्ति माना गया। तथापि, दर्शन की सिद्धि में एक प्रकट विलंब को किसी ने नहीं देखा। उसी भविष्यवाणी में ठहरने का एक समय भी प्रस्तुत किया गया है। निराशा के पश्चात यह पवित्रशास्त्रीय वचन अर्थपूर्ण प्रतीत हुआ: “क्योंकि यह दर्शन अभी नियत समय के लिये है, और अन्त में यह बोलेगा और मिथ्या न ठहरेगा; चाहे इसमें विलंब हो, तौभी उसकी बाट जोहते रहो; क्योंकि वह निश्चय पूरा होगा, वह देर न करेगा। धर्मो जन अपने विश्वास से जीवित रहेगा।” ठहरने का समय पहली निराशा है, जो 22 मार्च, 1844 को आई। मिलराइट बाइबिलीय समय-गणना का उपयोग करते हुए 1843 में संसार के अंत की भविष्यवाणी कर रहे थे। जब तब तक प्रभु नहीं आए, तब 22 मार्च, 1844 को पहली निराशा आरम्भ हुई। वही ठहरने का समय है।

यह दस कुँवारियों के दृष्टान्त में, हबक्कूक 2 में, और दानिय्येल 12 में ठहरने का समय है। दानिय्येल 12:11 कहता है, “और जिस समय से नित्य बलिदान उठा लिया जाएगा...” अग्रदूतों ने समझा कि 508 में, क्लोविस द्वारा विसीगोथों को पराजित किए जाने के साथ, मूर्तिपूजक व्यवस्था को दबा दिया गया। जिस समय से मूर्तिपूजकता हटा दी गई और

पापसी की स्थापना हुई (तीस वर्ष बाद, अर्थात् 538 में), तब 1290 दिन होंगे। अगला पद कहता है, “धन्य है वह जो प्रतीक्षा करता है और एक हजार तीन सौ पैंतीस दिनों तक पहुँचता है।” 508 में 1335 जोड़ने पर 1843 होता है। “धन्य है वह जो 1843 तक पहुँचता है।” 1335 ठहरने के समय को चिह्नित करता है, यह कहते हुए, “धन्य है वह जो प्रतीक्षा करता है और 1843 तक पहुँचता है।” यदि आप “नित्य” के विषय में अग्रदूतों की समझ को, जैसा एलेन व्हाइट करती हैं, बनाए रखते हैं, तो यह स्पष्ट है।

और अधिक स्पष्ट करने के लिए, यशायाह 30:18 कहता है, “इस कारण यहोवा विलंब करेगा।” यहाँ, प्रभु दस कुँवारियों के दृष्टान्त में दूल्हा है, और वह ठहरा हुआ है। “और इस कारण दूल्हा विलंब करेगा कि वह तुम पर अनुग्रह करे, और इस कारण वह उच्च किया जाएगा कि वह तुम पर दया करे; क्योंकि यहोवा न्याय का परमेश्वर है। धन्य हैं वे सब जो उसकी बाट जोहते हैं।” यह दानिय्येल 12:12 से मेल खाता है: “धन्य है वह जो प्रतीक्षा करता है और 1335 तक पहुँचता है।” दूल्हा 22 मार्च, 1844 को विलंब करता है। प्रथम निराशा तक पहुँचने और फिर प्रतीक्षा करने के साथ एक आशीष जुड़ी हुई है। जब तुम यहाँ पहुँचते हो, तो तुम्हें प्रतीक्षा करनी है। तुम किस बात की प्रतीक्षा कर रहे हो? हबक्कूक 2:3 कहता है, “क्योंकि दर्शन नियत समय के लिये है, और अन्त में वह बोलेगा और झूठा न ठहरेगा; चाहे वह विलंब करे, तौभी उसकी बाट जोह।” 1335 तक पहुँचने की आशीष इस इतिहास तक पहुँचने की आशीष है, जहाँ प्रभु मध्यरात्रि के घोष को पूरा करेगा।

हर किसी को मध्यरात्रि के पुकार में भाग लेने की अनुमति नहीं दी जाएगी। कुछ लोग मिलराइटों के साथ इसलिए चले क्योंकि उनका यीशु मसीह के साथ अपना कोई व्यक्तिगत अनुभव नहीं था और न ही परमेश्वर के वचन का उनका अपना व्यक्तिगत अध्ययन, बल्कि भय के कारण। मध्यरात्रि के पुकार के आने से पहले, प्रभु इन भाइयों को इस आंदोलन से अलग कर देता है। पहली निराशा उस प्रक्रिया का एक भाग है जो मध्यरात्रि के पुकार के लिए तैयारी करती है। एलेन व्हाइट के अनुसार, यदि हम इसे नहीं समझते, तो हम नीचे स्थित दुष्ट संसार की ओर जाने वाले मार्ग से गिर पड़ते हैं।

दूसरे स्वर्गदूत के संदेश की सामर्थ्यप्रदानता

Early Writings, पृष्ठ 238 से: 'दूसरे स्वर्गदूत के संदेश के समाप्ति-काल के निकट, मैंने स्वर्ग से एक महान् ज्योति को परमेश्वर की प्रजा पर चमकते देखा। इस ज्योति की किरणें सूर्य के समान उज्ज्वल प्रतीत होती थीं, और मैंने स्वर्गदूतों की आवाज़ें यह पुकारते हुए सुनीं, "देखो, दूल्हा आता है।" यही मध्यरात्रि का पुकार था, जिसे दूसरे स्वर्गदूत के संदेश को सामर्थ्य देना था। अग्रदूतों ने समझा कि पहले स्वर्गदूत का संदेश 1798 में आया, परन्तु 1840 में उस्मानी साम्राज्य के पतन के साथ उसे सामर्थ्य प्राप्त हुई। सब संदेश समय के एक निश्चित बिन्दु पर आते हैं और उसके बाद सामर्थ्य प्राप्त करते हैं। दूसरे स्वर्गदूत का संदेश 22 मार्च, 1844 को आता है, जब प्रोटेस्टेंट कलीसियाओं ने मिलेराइट संदेश के विरुद्ध अपने द्वार बन्द कर दिए। मध्यरात्रि का पुकार दूसरे स्वर्गदूत के संदेश को सामर्थ्य देता है। तीसरे स्वर्गदूत का संदेश 22 अक्टूबर, 1844 को आता है, और जब प्रकाशितवाक्य 18 का सामर्थी स्वर्गदूत उससे आ मिलता है, तब वह सामर्थ्य प्राप्त करता है। प्रत्येक संदेश इतिहास में आता है और उसके बाद सामर्थ्य प्राप्त करता है। इसे समझना महत्त्वपूर्ण है।

आधी रात की पुकार ने दूसरे स्वर्गदूत के संदेश को सामर्थ्य प्रदान की। स्वर्ग से स्वर्गदूत भेजे गए कि वे निरुत्साहित संतों को जगाएँ और उन्हें उनके सम्मुख उपस्थित महान कार्य के लिए तैयार करें। सबसे प्रतिभाशाली पुरुष इस संदेश को ग्रहण करने वाले पहले नहीं थे। विलियम मिलर इस संदेश को ग्रहण करने वाले पहले नहीं थे; बल्कि इसके विपरीत, वे इसे ग्रहण करने वाले अंतिम थे। इस संदेश को समझने में वे सबसे अधिक प्रतिभाशाली थे, जबकि सैमुएल स्नो पहले थे। जो लोग पहले इस कार्य में अगुवाई करते थे, वे ही इस संदेश को ग्रहण करने और पुकार को प्रबल करने में अंतिम थे। ऐतिहासिक रूप से, आधी रात की पुकार के संदेश को स्वीकार करने वाले अंतिम व्यक्ति विलियम मिलर थे।

द ग्रेट कॉन्ट्रोवर्सी, 376 से: मध्यरात्रि पुकार की सामर्थ्य-प्राप्ति के दौरान, लगभग 50,000 लोगों ने कलीसियाओं को छोड़ दिया। चूँकि मिलर का कार्य कलीसियाओं की उन्नति करने की प्रवृत्ति रखता था, आरंभ में उसे अनुकूल दृष्टि से देखा गया; परन्तु जब सेवकों और धार्मिक अगुवों ने आगमन-सिद्धान्त के विरुद्ध निर्णय कर लिया और इस विषय पर होने वाली समस्त हलचल को दबा देना चाहा, तब उन्होंने मंच से उसका विरोध किया और अपने सदस्यों को द्वितीय आगमन पर होने वाले प्रचार को सुनने का विशेषाधिकार, यहाँ तक कि सामाजिक सभाओं में अपनी आशा का उल्लेख करने की भी अनुमति, देने से इन्कार कर दिया। आज एडवेंटिस्ट कलीसिया के वे अगुवे जो इस संदेश की शिक्षा को कलीसिया में और यहाँ तक कि निजी घरों में भी निषिद्ध करते हैं, यहाँ मिलरवादी आंदोलन में पूर्वछायित किए गए हैं।

विश्वासियों ने अपने आप को बड़े परीक्षण और घोर असमंजस की स्थिति में पाया। वे अपनी कलीसियाओं से प्रेम रखते थे और उनसे अलग होने में अनिच्छुक थे; परन्तु जब उन्होंने देखा कि परमेश्वर के वचन की गवाही को दबाया जा रहा है और भविष्यवाणियों की जाँच करने का उनका अधिकार उनसे नकारा जा रहा है, तब उन्होंने अनुभव किया कि परमेश्वर के प्रति निष्ठा उन्हें अधीन होने की अनुमति नहीं देती। जो लोग परमेश्वर के वचन की गवाही को बाहर रखना चाहते थे, उन्हें मसीह की कलीसिया का गठन करने वाले नहीं माना जा सकता था। इसलिए, उन्होंने अपने पूर्व संबंध से अलग हो जाने को उचित समझा। 1844 की गर्मियों में, लगभग 50,000 लोग कलीसियाओं से अलग हो गए।

मिलर की समझ और सच्ची आधी रात की पुकार

एल्डर डैमस्टीगट की पुस्तक, *Foundation of Seventh-day Adventist Message and Mission*, के अनुसार, मिलर का विश्वास था कि दानिय्येल 8:14 और प्रकाशितवाक्य 14 के प्रथम स्वर्गदूत की उद्घोषणा ही मध्यरात्रि की पुकार थी—“देखो, दूल्हा आता है।” उसका विश्वास था कि यह संदेश मसीह के द्वितीय आगमन की पहचान कराता था। मिलर का विचार था कि पूरा इतिहास ही मध्यरात्रि की पुकार था, परन्तु एलेन व्हाइट कहती हैं कि मध्यरात्रि की पुकार एक निश्चित समय-बिन्दु पर पूर्ण हुई। सैमुएल स्नो ने अपनी प्रस्तुति का शीर्षक “The True Midnight Cry” रखा, ताकि उसे उस मिलरवादी शिक्षा से पृथक् किया जा सके जिसके अनुसार मध्यरात्रि की पुकार सामान्य संदेश थी।

सबसे अधिक आत्मिक लोगों ने सबसे पहले संदेश को ग्रहण किया, और जो पहले कार्य में अगुवाई करते थे, वे उसे ग्रहण करने और उस पुकार को प्रबल बनाने में सबसे पीछे रहे। विलियम मिलर, जिन्होंने 1833 से आगे इस कार्य का नेतृत्व किया था, जब अगस्त 1844 में मध्यरात्रि की पुकार का संदेश आया, तो उसके साथ संघर्ष करते रहे। वे कलीसियाओं से अलग होने के विषय में अनिश्चित थे, और अनेक वर्षों से मध्यरात्रि की पुकार के विषय में एक भिन्न समझ की शिक्षा दे रहे थे।

विलियम मिलर ने लिखा, “प्रभु के प्रकट होने के किसी विशेष दिन के विषय में मैं कभी भी निश्चित नहीं रहा, क्योंकि मेरा विश्वास था कि कोई मनुष्य उस दिन और घड़ी को नहीं जान सकता। मेरे सभी प्रकाशित व्याख्यानों में, जैसा कि शीर्षक-पृष्ठ पर देखा जा सकता है, लगभग सन् 1843 का उल्लेख है। अपने सभी मौखिक व्याख्यानों में मैं निरंतर अपने श्रोताओं से कहता था कि यदि मेरी गणना में कोई भूल न हो, तो वे कालखंड 1843 में समाप्त होंगे; परन्तु मैं यह नहीं कह सकता था कि अन्त उस समय से भी पहले नहीं आ सकता, और यह कि उन्हें निरंतर तैयार रहना चाहिए। सन् 1842 में, कुछ भाइयों ने बड़े दृढ़तापूर्वक ठीक उसी वर्ष का प्रचार किया, और मेरे ‘यदि’ रखने के कारण मेरी निन्दा की।” मई 1842 में, 1843 का चार्ट प्रकाशित किया गया, और भाइयों ने मिलर से कहा कि वे अपनी प्रस्तुति से ‘यदि’ हटा दें।

मिलर ने आगे कहा, “सार्वजनिक प्रेस ने यह भी प्रकाशित किया था कि मैंने प्रभु के आगमन के लिए एक निश्चित दिन, तेईस अप्रैल, निर्धारित किया है। इसलिए, उस वर्ष दिसंबर में, क्योंकि मैं अपनी गणना में कोई त्रुटि नहीं देख सकता था, मैंने अपना यह विश्वास प्रकाशित किया कि 21 मार्च, 1843, और 21 मार्च, 1844, के बीच किसी समय प्रभु

आएँगे।” मिलर पहले ही सातवें महीने के दसवें दिन के निष्कर्ष पर पहुँच चुके थे, और सैमुअल स्नो द्वारा इस निष्कर्ष का उपयोग मध्यरात्रि के पुकार की घोषणा करने से बहुत पहले, मिलर इसके विषय में लिख चुके थे। वही मिलर थे जिनका उपयोग प्रभु ने उस तर्क-प्रणाली को संयोजित करने के लिए किया, जिसका प्रयोग सैमुअल स्नो ने 22 अक्टूबर, 1844, की पहचान करने के लिए किया।

मिलर ने लिखा, “वर्ष 1843 के दौरान, प्रेस और कुछ उपदेश-मंचों द्वारा मुझ पर और मेरे साथियों पर अत्यन्त उग्र निन्दाएँ की गईं। हमारे उद्देश्यों पर आक्रमण किया गया, हमारे सिद्धान्तों का मिथ्या निरूपण किया गया, हमारे चरित्रों की निन्दा की गई।” समय बीतता गया, और 21 मार्च, 1844, प्रभु के प्रकट हुए बिना ही निकल गया। निराशा अत्यन्त बड़ी थी, और बहुतों ने फिर उनके साथ चलना छोड़ दिया। इस समय से पहले, 1840 से, अनुमानतः 200,000 मिलरवादी थे, परन्तु इस बिन्दु तक केवल 50,000 ही शेष रह गए थे।

मिलर ने आगे कहा, “इससे पहले, 1843 के पतझड़ में, मेरे कुछ भाई कलीसियाओं को बाबेल कहने लगे और यह आग्रह करने लगे कि उनसे निकल आना एडवेंटवादियों का कर्तव्य है। इससे मैं अत्यन्त दुःखी हुआ। इसका प्रभाव न केवल बहुत बुरा था, बल्कि मैं इसे परमेश्वर के वचन का विकृतिकरण, पवित्रशास्त्र का तोड़-मरोड़ भी मानता था।” मिलर दूसरे स्वर्गादूत के संदेश के साथ संघर्ष करता रहा, जिससे उसके लिए सच्चे मध्यरात्रि की पुकार के संदेश को स्वीकार करना और भी कठिन हो गया। यह प्रथा फैल गई, और कलीसियाएँ उनके विरुद्ध बन्द कर दी गईं, जिससे वैर उत्पन्न हुआ और अधिकांश एडवेंटवादी अपनी-अपनी कलीसियाओं से पृथक हो गए।

अपना प्रकाशित समय बीत जाने के बाद, मिलर ने ठीक अवधि के संबंध में अपनी निराशा को स्वीकार किया, परन्तु अपने विश्वास को बनाए रखा। 1844 की गर्मियों में सातवें महीने के आंदोलन तक वह पश्चिम में अपने परिश्रम में लगा रहा। इस आंदोलन में उसका कोई सहभाग न था, सिवाय अठारह महीने पहले लिखे गए एक पत्र के, जिसमें मूसा की व्यवस्था के वे अनुष्ठान बताए गए थे जो उस महीने की ओर संकेत करते थे। उसने यह आशा नहीं की थी कि उन विषयों का ऐसा उपयोग किया जाएगा या ऐसे प्रमाणों में विश्वास उद्धार की कसौटी बन जाएगा। 22 अक्टूबर, 1844 से दो या तीन सप्ताह पहले तक उसका इस आंदोलन के साथ कोई सहभागिता या सम्मति न थी। 6 अक्टूबर, 1844 को हाइम्स को लिखे एक पत्र में, मिलर ने लिखा, 'मैं सातवें महीने में एक ऐसी महिमा देखता हूँ, जैसी मैंने पहले कभी नहीं देखी... अब, प्रभु के नाम की स्तुति हो, मैं पवित्रशास्त्रों में एक ऐसी शोभा, एक ऐसा सामंजस्य, एक ऐसी संगति देखता हूँ, जिसके लिए मैं बहुत दिनों से प्रार्थना करता आया हूँ, पर आज तक उसे देख नहीं पाया था। हे मेरे प्राण, यहोवा का धन्यवाद कर। भाई स्नो, भाई स्टॉर्स, और अन्य लोग, मेरी आँखें खोलने में अपनी साधनता के लिए धन्य हों। मैं लगभग घर पहुँच गया हूँ। महिमा, महिमा, महिमा, महिमा।'

इसके बाद, मिलर ने “मिडनाइट क्राय” पर पुनर्विचार किया और उसे उन्मादवाद कहा। डैमस्टीगट यह उल्लेख करते हैं कि स्नो ने “मिडनाइट क्राय” संदेश की अपनी मूल रूपरेखा मिलर के पूर्ववर्ती कार्य से प्राप्त की थी।

मार्च 1844 में प्रकाशित स्नो की गणनाओं ने 12-17 अगस्त 1844 को आयोजित एक्सेटर शिविर-सभा तक बहुत कम ध्यान आकर्षित किया। वहाँ, मसीह के पुनरागमन के लिए उसके द्वारा निर्धारित सटीक तिथि ने अनेक मिलेराइटों को उद्वेलित कर दिया, जिससे उनका मिशनरी प्रयास अपने चरम पर पहुँच गया। उनकी यह प्रतिक्रिया “सातवें महीने का आंदोलन” के नाम से प्रसिद्ध हुई। यद्यपि मिलेराइट नेता आरंभ में संशयग्रस्त थे, तथापि अपेक्षित घटना से कुछ सप्ताह पूर्व वे इस आंदोलन से जुड़ गए और स्नो के विचारों को मुद्रित तथा समर्थित होने दिया।

मध्यरात्रि की पुकार और उसका परिणाम

एलेन व्हाइट की पहली दर्शन-झलक में परमेश्वर की प्रजा स्वर्ग की ओर जाने वाले एक मार्ग पर दिखाई गई है, और उनके पीछे एक ज्योति थी जिसे “मिडनाइट क्राइ” कहा गया। सैमुअल स्नो द्वारा प्रस्तुत संदेश को समझना आवश्यक है। मई 1842 में 300 प्रचारकों के लिए 300 चार्ट मुद्रित किए गए। 22 मार्च 1844 तक, पहली निराशा के बाद, उस चार्ट को एक ओर रख दिया गया, और बहुतों ने उस आंदोलन को छोड़ दिया। जो ठहरे रहे, उन्हें प्रतीक्षा करनी थी।

एक्सेटर कैंप-मीटिंग में, स्नो ने दिखाया कि प्रभु 22 अक्टूबर 1844 को, अर्थात् प्रायश्चित्त के दिन, आएँगे। इसी ने उन्हें उस संदेश की घोषणा करने के लिए प्रेरित किया।

जोसेफ बेट्स ने वर्णन किया कि एक्सेटर शिविर-सभा के पश्चात्, जब वे रेलगाड़ी के डिब्बों के बीच होकर चल रहे थे, तब उन्होंने आवाज़ें सुनीं जो बार-बार कह रही थीं, 'देखो, दूल्हा आता है!' यह आंदोलन दो महीनों में समूचे संयुक्त राज्य भर में फैल गया, जो 22 अक्टूबर, 1844 को महान निराशा पर जाकर समाप्त हुआ।

डेम्स्टीग्ट दिसंबर 28-29, 1844 को आयोजित एडवेंटवादियों के लो हैम्पटन सम्मेलन के विषय में, जिसमें हाइम्स और मिलर सम्मिलित थे, टिप्पणी करते हैं। हाइम्स ने पवित्र जनों को सांत्वना देने, मसीही संसार को जागृत करने, और पापियों के लिए उद्धार की घोषणा करने पर बल दिया। कुछ सप्ताह बाद एडवेंट प्रेस का प्रकाशन पुनः आरंभ हुआ, और हाइम्स ने घोषित किया कि उद्धार का द्वार खुला है। मिलर ने धीरे-धीरे "शट डोर" की चरम अवधारणा का परित्याग किया और "मिडनाइट क्राइ" के संबंध में अपने मूल दृष्टिकोण पर लौट आए। उसी महीने एलेन व्हाइट को अपना पहला दर्शन हुआ, जिसमें यह दिखाया गया कि जो लोग "मिडनाइट क्राइ" को अस्वीकार करते हैं, वे मार्ग से गिर पड़ते हैं। वह दर्शन विलियम मिलर के लिए उतना ही था जितना किसी और के लिए।

विलियम मिलर की अंतिम परीक्षा और विरासत

Early Writings, पृष्ठ 257 से: "तब मेरा ध्यान विलियम मिलर की ओर आकर्षित किया गया। वे व्याकुल दिखाई दे रहे थे और अपने लोगों के लिए चिंता और क्लेश से दबे हुए थे। जो समूह 1844 में एकजुट और प्रेमपूर्ण था, वह अपना प्रेम खो रहा था, एक-दूसरे का विरोध कर रहा था, और शीतल, पतित दशा में गिरता जा रहा था। यह देखकर शोक ने उनकी शक्ति क्षीण कर दी। मैंने देखा कि अगुवाई करने वाले पुरुष उन पर दृष्टि रखे हुए थे, विशेषकर जोशुआ हाइम्स, और इस भय में थे कि कहीं वे तीसरे स्वर्गदूत का संदेश ग्रहण न कर लें।" इस संदर्भ में तीसरे स्वर्गदूत का संदेश सब्त है। जब मिलर स्वर्ग से आने वाले प्रकाश की ओर झुकते थे, तब ये पुरुष उनके मन को उससे हटाने के लिए योजनाएँ बनाते थे। मानवीय प्रभाव ने उन्हें अंधकार में बनाए रखा और उन लोगों के बीच उनका प्रभाव भी बनाए रखा जो सत्य का विरोध करते थे। अंततः मिलर ने स्वर्ग से आने वाले प्रकाश—अर्थात् सब्त—के विरुद्ध अपना स्वर उठाया। वे उस संदेश को ग्रहण करने में असफल रहे जो उनकी निराशा का स्पष्टीकरण देता और अतीत पर प्रकाश और महिमा डालता। उन्होंने ईश्वरीय के स्थान पर मानवीय बुद्धि का सहारा लिया। परिश्रम और आयु से टूट जाने के कारण वे उतने उत्तरदायी नहीं थे जितने वे लोग थे जिन्होंने उन्हें सत्य से दूर रखा। पाप उन्हीं पर ठहरता है। यदि मिलर तीसरे स्वर्गदूत का प्रकाश देख पाते, तो बहुत-सी बातें उनके लिए स्पष्ट हो जातीं। परंतु उनके भाइयों ने उनके प्रति ऐसा गहरा प्रेम प्रकट किया कि उन्होंने समझा कि वे कभी उनसे अपने को अलग नहीं कर सकते। परमेश्वर ने उन्हें मृत्यु की शक्ति के अधीन होने दिया और उन्हें उन लोगों से दूर, जिन्होंने उन्हें सत्य से हटाया था, कब्र में छिपा दिया। मूसा ने प्रतिज्ञात देश में प्रवेश करने से पहले भूल की थी; उसी प्रकार मिलर ने भी भूल की, जब वे शीघ्र ही स्वर्गीय कनान में प्रवेश करने वाले थे। दूसरों ने उन्हें ऐसा करने के लिए प्रेरित किया; उसका लेखा दूसरों को देना होगा। परंतु स्वर्गदूत परमेश्वर के इस सेवक की बहुमूल्य धूल की रखवाली कर रहे हैं और वह अंतिम तुरही की ध्वनि पर बाहर आएगा।"

निष्कर्ष: आज के लिए शिक्षाएँ

अंत में, विलियम मिलर संसार के अंत में रहने वाले सेवेंथ-डे ऐडवेंटिस्टों का प्रतिरूप प्रस्तुत करते हैं। एलेन व्हाइट का पहला दर्शन उसके अपने समय की अपेक्षा हमारे समय के लिए अधिक है। संसार के अंत में, सेवेंथ-डे ऐडवेंटिस्ट मध्यरात्रि की पुकार के प्रकाश को अस्वीकार करेंगे। मध्यरात्रि की पुकार के प्रकाश को केवल इसी इतिहास को समझकर ही समझा जा सकता है। पहली निराशा ने मिलराइट आंदोलन को उन लोगों से शुद्ध कर दिया जो वहाँ अनुचित कारणों से थे, और लोगों को उस परखने वाले अनुभव के लिए तैयार किया जो उन्हें परमपवित्र स्थान में ले जाने वाला था। जो लोग पहली निराशा तक पहुँचते हैं, वे तभी धन्य हैं जब वे 22 अक्टूबर, 1844 तक प्रतीक्षा करते

हैं। यह समय परमेश्वर द्वारा इस उद्देश्य से नियत किया गया है कि वह ऐसी प्रजा उत्पन्न करे जिसे वह परमपवित्र स्थान में एकत्र करेगा। मध्यरात्रि की पुकार को अस्वीकार करना और पथ से गिर जाना, इस समस्त इतिहास को अस्वीकार करना है।

विलियम मिलर ने तीन भूलों की, और हम सदा तीन परीक्षाओं द्वारा परखे जाते हैं। उनकी पहली भूल यह थी कि उन्होंने दिसंबर 1844 में मध्यरात्रि की पुकार को अस्वीकार कर दिया। उनकी दूसरी भूल यह थी कि उन्होंने परमेश्वर के स्थान पर मनुष्यों की सुनी, जिसके परिणामस्वरूप उनकी तीसरी भूल हुई: सब्त को अस्वीकार करना। संसार के अंत में, सेवन्थ-डे एडवेंटिस्ट मध्यरात्रि की पुकार के इतिहास और प्राचीन मार्गों में लौट आने की बुलाहट को अस्वीकार कर देंगे, क्योंकि वे अपने अगुओं की सुनेंगे। ऐसा करके वे पशु की छाप के लिए अपने को तैयार करते हैं, और मिलर की तीन-चरणीय परीक्षा-प्रक्रिया को दोहराते हैं, जो इस बात से आरंभ होती है कि वे मध्यरात्रि की पुकार के संदेश और इतिहास के प्रति कैसा संबंध रखते हैं।

केवल दो ही भविष्यवाणियाँ हैं जो पहली निराशा से दूसरी निराशा तक के इतिहास से संबंधित हैं: 2300 दिन ("यद्यपि दर्शन में विलम्ब हो, तौभी उसकी बाट जोहते रहो") और 2520। 2520 को अस्वीकार करना मध्यरात्रि की पुकार को अस्वीकार करना है। मध्यरात्रि की पुकार को अस्वीकार करना नीचे स्थित दुष्ट संसार की ओर जाने वाले पथ से गिर पड़ना है।

हम अगले प्रस्तुतीकरण में इस विषय पर और विस्तार से विचार करेंगे।